लोकसंग्रही समाजचिन्तक गौतम बुद्ध एवं उनकी प्रासंगिकता

डॉ0 सुधीर कुमार राय

सिद्धार्थ से बुद्ध बनना एक युगान्तकारी घटना है। सिद्धार्थ द्वारा देखे गये चार दृश्यों से उपजी करुणा तथा संसार दुःखमय है, के भाव ने सांसारिक बन्धनों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया। दुःखों का कारण तथा उनसे निवारण के उपाय जानने हेतु सिद्धार्थ का घर–त्याग कर निकलना बौद्ध धर्म में 'महाभिनिष्क्रमण' कहा जाता है। अब सिद्धार्थ गौतमबुद्ध हो चुके हैं। गौतमबुद्ध का समग्र चिन्तन मानवता, करुणा, दया, शान्ति तथा अहिंसा पर आधारित है। मानवमात्र का कल्याण उनका अन्तिम उद्देश्य है। एक धर्म के रूप में बौद्ध धर्म की महत्ता उसके सामाजिक समरसता तथा समता सम्बन्धी विचारों के कारण ही है। इसका विस्तार दुनिया के व्यापक क्षेत्र में है। क्षेत्र–व्याप्ति के आधार पर यह विश्वधर्म के रूप में भी जाना जा सकता है और इस धर्म के केन्द्र–बिन्दु हैं– गौतम बुद्ध।